8/6/2020

सेमेस्टर - VI
मुख्यांश (CORE) प्रतिष्ठा - 14

भूमंडलीकरण

- महत्व
- आवश्यकता
- साहित्य
- संस्कृति
- समाज और भाषा

डॉ. सुनीता कुमारी गुप्ता
'हिन्दी विभाग'
मारवाड़ी महाविद्यालय रॉंची

भूमंडलीकरण के युग में भारतीय संस्कृति, साहित्य, समाज और भाषा में बड़ी तेजी से परिवर्तन आ रहा है। इस परिवर्तन की रफ्तार के साथ आबादी के सक्षम लोगों का एक छोटा-सा हिस्सा ही चल पा रहा है, दूसरी ओर वंचितों, गरीबों, किसानों, मजदूरों आदि की बड़ी आबादी इस परिवर्तन की नकारात्मक को झेल रही है, वैसे, परिवर्तन तो समाज के हर वर्ग में आया लेकिन उनके स्तर में आसमान-जमीन का अंतर है वस्तुतः भारतीय समाज में भूमंडलीकरण की चेतना का अधकचरा विकास हुआ है, ऐसे विकास के पीछे कारण भी स्पष्ट है कि भारतीय समाज पश्चिम की संस्कृति का अन्धानुकरण कर रहा है। इस प्रवृत्ति के कारण समाज में जिस कोटि की भूमंडलीय चेतना का विकास होना चाहिए था, नहीं हो पाया है, भूमंडलीय चेतना का सही दिशा में विकास तभी संभव हो पाता जब भारतीय संस्कृति

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

INTECH

और आचार-विचार पर आधारित सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन होता, किन्तु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

भारत में जिन्होंने पश्चिमी जीवन शैली का अंधानुकरण किया उनके हृदय में यह बात है कि उनकी भारतीय संस्कृति के तत्व जड़ हैं और त्याज्य हैं, दूसरी ओर, समाज में ऐसे भी लोग हैं, जिनकी आबादी ज्यादा है, और जो पश्चिमी सांस्कृतिक प्रभाव से अपने को दूर रखते हैं— वे पश्चिमी संस्कृति को अपसंस्कृति की संज्ञा देते हैं, उसके किसी भी तत्व को स्वीकार करने में हिचकते हैं और कुछ स्वीकार भी करते हैं तो वह उनके तन पर के कपड़ों तक सीमित रह जाता है, दिल और दिमाग तक नहीं जाता है, यानी बड़ी आबादी रूढ़िवादिता को कायम रखना चाहती है, तो दूसरी ओर समुन्नत और समृद्ध-समर्थ वर्ग के लोग नकल की प्रवृत्ति के साथ पश्चिमी संस्कृति को अपना रहे हैं— इन समर्थ और समृद्ध लोगों की मानसिकता भी दोहरी है— स्वयं के लिए अलग और दूसरों के लिए अलग, स्त्री के लिए अलग और पुरुष के लिए अलग, पुत्र के लिए अलग पुत्री के लिए अलग... यानी, वे अंधकचरी मानसिकता के साथ, नकल की प्रवृत्ति के साथ, अपनी पहचान भी खो रहे हैं और जो नयी पहचान बना रहे हैं, वह न तो पश्चिमी है और न भारतीय— उसमें अंधकचरापन है। उनकी संस्कृति मात्र दिखावे के लिए है— यह बताने के लिए है कि वे आधुनिक हो गए हैं। आधुनिकता के बुखार से तपते

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

INTECH

ऐसे लोगों की हरकतें भारतीय संस्कृति, समाज, साहित्य और भाषा को अपमानित कर रही है। इस परिस्थिति में यह देखना जरूरी है कि भारतीय समाज में सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक और भाषाई परिवर्तन किस कोटि का हुआ है, क्यों हुआ है?

भूमंडलीकरण कोई आज की प्रक्रिया हो ऐसी बात नहीं है। हमेशा दुनियां के विभिन्न देश एक दूसरे के करीब आते रहे हैं, विभिन्न धर्म और समुदाय के लोग, अपने देश से दूसरे देशों में आते-जाते रहे हैं। उनके बीच, विचार और व्यवहार का आदान-प्रदान होता रहा है। वे आपस में सांस्कृतिक और भाषायी आदान-प्रदान के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान का आदान-प्रदान करते रहे हैं। लेकिन, तब दो समुदायों या दो देशों के बीच जो सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता था, वह इकतरफा नहीं होता था; उनके बीच एक सम्मिश्रित संस्कृति बनती थी, एक समुदाय दूसरे समुदाय से संस्कृति के तत्वों को लेते थे और हर एक अपनी संस्कृति को परिमार्जित करता था बेहतर मानव-जीवन को पाने के लिए। आज के दौर के अमरीकी नेतृत्व वाले भूमंडलीकरण में दुनिया के हर देश पर अमेरिका या कहें तो पश्चिमी संस्कृति का एक तरफा आगमन हो गया है, वह भी बहुत तीव्र गति से — यह एक सांस्कृतिक हमले की तरफ समाज-शास्त्रियों के द्वारा देखा गया है। भारत भी इस प्रक्रिया से अछूता नहीं है। इस भूमंडलीकरण के दौर में भारत का समाज, उसकी संस्कृति की पहचान, उसकी सुगंध, उसका लालित्य

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

INTECH

उसका वैचारिक परत सबकुछ धुल गया है। अमेरिकी संस्कृति की फालामी उफनती नदी की धारा में।

सांस्कृतिक दृष्टि से आज का भारतीय समाज संक्रमण-कालीन स्थिति में है। यहाँ के अधिमाँश लोग न अपनी संस्कृति से अलग हो पा रहे हैं और न अमेरीकी संस्कृति को पूर्णतः में स्वीकार कर पा रहे हैं। भारतीय समाज में जिन्होंने आधुनिकता की चादर ओढ़ी है वे भी वस्तुतः न आधुनिक हैं और न सुन्दर नुऔर नूतन परीमार्जित संस्कृति में हैं। बल्कि यह कहना उचित होगा कि अधिकांश भारतीय आज एक अँधेरी गुफा में प्रवेश कर गए हैं। उनकी नूतन चेतना का स्वर विकृति का शिकार है।

भारतीय समाज अपने 'वसुधैव कुटुम्बकम' की संस्कृति और नीति पर अपनी संस्कृति को सदा से ही सर्वग्राही और समावेशी बनाए रखा है लेकिन आज चिन्ता का विषय यह है समाज भारतीय संस्कृति का परिमार्जन नहीं कर रहा है, बल्कि वह विस्थापन की ओर ही अग्रसर हो रहा है या फिर एक अपसंस्कृति का निर्माण कर रहा है, जिसमें अमेरीकी संस्कृति के बेरंग ज्यादा है, जो भारतीय जीवन को बदरंग करते हैं, बदशक्ल बनाते हैं।

इस देश के भूमंडलीकरण के इस दौर में बहुत से समुदाय महसूस करते हैं कि वे रात में सोते हुए अपने

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

INTECH

गाँव-देहात से न्यूयॉर्क की सड़क पर पहुँचा दिए गए हैं और जागने के बाद उनको लगता है कि वे पृथ्वी पर नहीं हैं, बल्कि किसी और ग्रह में ठेल दिए गए हैं, वे अचम्भित हैं, अपनी गरीबी, अपने तन के फटे वस्त्रों और न्यूयॉर्क की सड़कों पर अमीरों की चमचमाती कारों को देखते हुए, अमेरिकी लोगों के तन पर के कपड़ों को देखते हुए, उनके भव्य होटलों को देखते हुए और याद करते हैं — अपने गाँव देहात की पगडंडियों पर पीने के पानी के लिए उनका दस किलो-मीटर पैदल चलना, सप्ताह में कई दिन सोते चूल्हों को विवशता के साथ देखना ... और जब वे फटे कपड़ों में उनकी बेटियों के शरीर के झाँकते अंगों को याद करते हैं, तो उनका सिर शर्म से झुक जाता है लेकिन तभी वे याद करते हैं कि अमेरिकी शहर के युवक और युवतियाँ ब्रांडेड फटे जींस में चले आ रहे हैं — झलकती जाँघों का प्रदर्शन करते हुए तो उनको कुछ राहत मिलती है कि गरीबी और अमीरी के यह जींस एक पुल है समता का ! और जब इस स्वप्न से वह भारतीय समुदाय निकलता है तो वह भी नकल करने लगता है, और पहनने लगता है अपनी आर्थिक औकात के ब्रांडेड फटे जिन्स की नकल। सपने देखने लगता है दस सितारा होटलों और चमचमाती एस.यू.वी. कारों का तो उनमें अवसाद के लक्षण-प्रकट होते हैं। वह भारतीय नकली जिन्स तो खरीद सकता है लेकिन हर दिन चूल्हा नहीं जला सकता और उसके लिए होटलों

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

INTECH

में खाना तो सपने में भी कठिन है!

अमेरीकी नेतृत्ववाले इस भूमंडलीकरण में असीम आर्थिक असमानता में भी हम भारतीय समुदायों, विशेष कर निम्न वर्ग और मध्य वर्ग के समुदायों को कठिन सांस्कृतिक परीस्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। आज उनकी संस्कृति ही नहीं मिट रही बल्कि, उनको साँस लेना भी मुश्किल हो रहा है। अभी इस समय उनको ऐसे साहित्य की जरूरत है, जो नूतन वैश्विक चेतना का निर्माण उनके लिए कर सके, उनको सही राह दिखलाये और उनको जीने की कला दे जो भारतीय संस्कृति के आधार पर एक आधुनिक परीमार्जित संस्कृति हो।

यह सत्य है कि जो संस्कृति समयानुकूल सही दिशा में, सही सोच विचार के साथ परीमार्जित नहीं होती वह या तो पिछड़ जाती है या मिट जाती है।

भारतीय समाज को भूमंडलीकरण के इस दौर में जिन अपसंस्कृतियों का सामना करना पड़ रहा है वे हैं, उपभोक्तावादी क्रांडिड संस्कृति, उससे जनित और प्रभावित मीडिया, विज्ञापन का मायावीजाल जो मानसिक दबाव बना कर उपभोक्ता बनाता है, श्लीलता और नैतिकता को अचंभित करनेवाली परिभाषाएँ नारी का नूतनता के साथ शोषण, उच्च वर्ग और प्रभावी लोगों के बीच बढ़ता भ्रष्टाचार, बढ़ता अपराध, आतंकवाद आदि और इन सब से प्रभावित भारतीय जन समुदाय

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

INTECH

और उसका साहित्य, भाषा, जीवन शैली, सोच, चिंतन, आध्यात्मिकता और रोटी के लिए बढ़ती हुई संघर्ष लीला, इन नकारात्मक तत्व में एक तत्व अश्लीलता को देखे तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उसकी परिभाषा पहले की भारतीय परिभाषा के विपरीत है और उसका इथिकल कोड यानी उसकी नैतिकता भी नूतन सोच पर है, जिसे भारतीय संस्कृति में अनैतिक कहा जाता रहा है, आज के भूमंडलीकरण में श्लीलता खुलेपन में है, नग्नता में है, विकृत एक्सपोजर में है, विकृति बॉडी लैंग्वेज में है, विकृत भाषा में है। उस विकृति का शिकार तो अभिवादन और प्रशंसा के शब्द भी हो गए हैं - कभी पश्चिम में भी वेश्याओं के लिए प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी शब्द हॉट, सिजलिंग, बर्निंग, सेंसुअस, सेक्सी, हॉट चिक आदि आज हिंदी में धड़ल्ले से लोग प्रयोग में ला रहे हैं। अपने घर और बाहर की लड़कियों को खुश करने के लिए -- बोल रहे हैं हाय सेक्सी, हाय सिजलिंग, हाय हॉट आदि। यह भाषाई अपसंस्कृति के वैश्वीकरण की एक छोटी सी तस्वीर है।

बाजार घर में दिखता है, लेकिन घर में घर नहीं दिखता! बाजारवाद यही है। दिखता है टाइल्स, मॉडर्न बाथरूम, मिनी जिम, हलो-हाय की बोलचाल वाली भाषा आदि, परिवार के नाते रिश्ते अब भारतीय संस्कार से दूर होते जा रहे हैं, आपसी संवाद और व्यवहार भौतिकवादी या बाजारवादी हो गया है। समाज में अनियोजित और अनियंत्रित परिवर्तन हो रहा है - अधकचरी मानसिकता के साथ और इस मानसिकता में

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

INTECH

सबसे ज्यादा भुक्तभोगी हैं स्त्रियाँ — पहले भी बाजार की छिपी-ढकी वस्तु थीं और आज बाजार की प्रथम वस्तु हैं, रात-दिन खुले उन्मुक्त बाजार में, इन्टरनेट पर भी, हिंदी सिनेमा में भी, हिंदी के साहित्यकारों में भी, गनीमत है कि कुछ साहित्यकार इसे अपसंस्कृति से लड़ने वाले साहित्य का सृजन कर रहे हैं और नूतन चेतना के लिए वातावरण बना रहे हैं।

हिन्दी के साहित्यकार का एक वर्ग पश्चिम के फेमिनिज्म यानी स्त्री-विमर्श कर उनको फ्री सेक्स के लिए लिव इन के लिए, समलैंगिकता के लिए उत्प्रेरित कर रहे हैं तो साहित्यकारों का एक वर्ग भारतीय संस्कृति के अनुरूप स्त्री-विमर्श को अपने साहित्य में संतुलित भाषा में उपस्थित कर रहा है। अनेक व्यंग्य उपन्यासों का सृजन तो नूतन सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक, धार्मिक विसंगतियों पर पूरी तात्कालिकता के साथ हमला कर रहे हैं। हाशिये के लोगों के लिए जद्दोजहद कर रहे हैं। कुछ साहित्यकार खुश हो रहे हैं कि दुनिया के पच्चीस से भी अधिक देशों में वेश्यावृत्ति को कानूनी मान्यता मिल गयी है, भारत में समलैंगिकता को कानूनी जामा पहना दिया गया है और उनको उम्मीद है कि भारत में अब वेश्यावृत्ति भी कानूनी मान्यता प्राप्त कर लेगी। दूसरी ओर, अनेक ऐसे उपन्यासकार, व्यंग्यकार, कवि, आलोचक अमेरिकी अपसंस्कृति को नकारते हुए हिंदी में साहित्यिक कर्म कर रहे हैं।

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

INTECH

कुछ लोग भारत को रूढ़िवादी कहते हुए अघाते नहीं है, जबकि अमेरिकी संस्कृति के समस्त नकारात्मक तत्वों को विश्व के अनेक देशों ने पाबंदी लगा दी है, जिनमें एक अत्याधुनिक फ्रांस भी है। अतः अपसंस्कृति की साहित्यिक कृतियों में प्रखरता के साथ, आक्रोश के साथ आलोचित किए जाने की जरूरत है। ऐसी आलोचना तो कबीर ने भी कभी की थी जब धर्म और समाज में विकृति घर करने लगे थे। दक्षिण भारत के बारहवीं शताब्दी के वसव कवियों ने भी विकृतियों की धज्जियाँ उड़ाई थीं। लेकिन आज तो सर्वत्र विकृतियाँ दिख रही हैं — संस्कृति हो या आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, जीवन हो सब में विकृतियों का समावेश थोक भाव में हुआ है। आज विसंगति के बोल, विवाद के बोल ही समाचार बनते हैं और वही वही साहित्य में विवेचित होते हैं। संगतिपूर्ण बोल या सत्य बोल की कीमत न समाचार जगत् में है न साहित्य जगत् में।

अलका सरावगी के उपन्यास 'कलि-कथा : वाया बाईपास' में किशोर बाबू पंडितजी से कहते हैं, 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत को जितना लूटा था। उससे हजारों गुना लूट अब विदेशी कम्पनियाँ हमारे देश में कर रही हैं। डॉलर की तुलना में रुपये का सम दाम इतना गिरा दिया है कि यहाँ से एक करोड़ का माल विदेश जाता है तो उसकी कीमत मिलती है एक चौथाई।' कहने का तात्पर्य है कि भूमंडलीकरण के प्रभाव आज उपन्यासों के विषय हैं। राजू शर्मा का 'विसर्जन' देखें तो पता चलेगा कि विकृतियों के कारक तत्व क्या-क्या हैं।

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

INTECH

दूसरी ओर, रविन्द्र कालिया के उपन्यास, ~~एबीसी~~ 'एबीसीडी' में भारत से पलायन की ललक लिए भारतीय युवा पीढ़ी पर तंज करता है। उपन्यास में एक माँ अपने बेटे से बोलती है— 'नागरिकता लेने के लिए न जाने कितने सच्चे झूठे शपथ-पत्र तुमने दाखिल किए थे। मेरा मुँह न ~~खुलवाओ~~ खुलवाओ'। और पुत्र का जवाब आता है— 'माँ, तुम जैसे जानती नहीं कि उसी ऋषि-मुनियों की धरती से छल-छद्म से कितने लोग यहाँ आते हैं। कोई सगी बहन से फर्जी शादी रचाकर चला आता है तो कोई बहू से। जितनी झूठी शादियाँ और झूठे तलाक यहाँ के हिन्दुस्तानियों के बीच होते हैं किसी दूसरे मुल्क के लोगों के बीच न होते होंगे।' माँ का आक्रोश और बेटे का जवाब क्या यह नहीं बताता कि अब भारतीय माँ और बेटे के बीच कैसा अविश्वास पैदा हो गया है और नयी पीढ़ी की मानसिकता मे क्या विकार पैदा हो गया है। विवाह संस्था में विकृति उत्पन्न करने की चेष्टा को उषा प्रियम्बदा ने अपने उपन्यास 'अंतर्वंशी' में देखा है— उन्होंने देखा कि बनारस की एक परम्परागत मध्यवर्गीय परिवार में जन्मी चुनमुन अमेरिका जाने के क्रम में चुनमुन से बाँसुरी, ~~बनमाली~~ वनश्री और फिर वाना बन जाती है और समलैंगिकता को अपनाने की ओर कदम बढ़ाती है। अपने पति के मित्र से विवाह

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

INTECH

कर लेती है। और ऐसा करते हुए उनके पास एक अमेरिकी सोच है। रविन्द्र वर्मा का उपन्यास 'दस बरस का भंवर' बाजारवाद और उपभोक्तावाद को देखता, परखता और विवेचित करता है और उस उपन्यास के इस संवाद में दिख जाता है, 'हम जिस समय में जी रहे हैं, उसमे सिजोफ्रेनिया का अंदेशा और भी ज्यादा है। यह ऐसा समय था जिसमें देश के एक तिहाई लोग भूखे थे और एक चौथाई लोग पिज्जा खा रहे थे। बाकी लोग पिज्जा की प्रदर्शन— खिड़की में आँखें गड़ाए खड़े थे।'

आज के हिन्दी उपन्यास अखबारों की तरह तात्कालिकता वाले होते चले जा रहे हैं और उनका स्वरूप भी बहुत पन्नों वाला समाचार पत्र की तरह हो गया है। पश्चिम के साहित्य में जिस प्रकार अपशब्दों का प्रयोग होता है वैसा ही प्रयोग राजेन्द्र यादव, काशीनाथ सिंह, डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी आदि ने किया है। ज्ञान चतुर्वेदी के उपन्यास 'हम न मरब' में आपत्तिजनक गालियों की संख्या 262 से ज्यादा है, वे स्त्रियों को अपमानित और लज्जित करने वाली है। हिन्दी की सभी विधाओं में रचे जा रहे साहित्य में भाषा पर भूमंडलीकरण का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि भूमंडलीकरण ने भारतीय समाज, संस्कृति, साहित्य और भाषा में बहुत परिवर्तन लाया है और इस परिवर्तन में सार्थक परिवर्तन के तत्व नाम मात्र के हैं और नकारात्मक तत्व थोक भाव में उपस्थित हैं।

INTECH SYSTEMS
POWER TO EMPOWER

डॉ सुनीता कुमारी गुप्ता
मारवाड़ी महाविद्यालय रां